

# श्री भविष्योत्तर पुराणोक्त महा लक्ष्मी व्रत कथायाः संचित अनुवाद

दिव्य जीवन संघ रैणावारी शाखाया  
(Divine Life Society Branch Rainawari)

सम्पादितः च प्रकाश्यं नीतः



इस संघ का सम्बन्ध हर एतवार को रैणावारी कालियार  
मन्दिर में प्रातः आठ बजे से प्रारम्भ होता है ।

*Printed at:*

**The Krishna Printing Press**  
*Kothi-Bagh, Srinagar, Kashmir*

## —विज्ञापन—

पूर्व काल से ही इस देश में वत्सर के तीन भाग माने जाते हैं । पहला - चेत, वैशाख, जिष्ठ, आषाढ़ महीनों का - जब धान्य और खाद्य पदार्थों की उत्पत्ति होती है । यह काल ब्रह्माजी (सृष्टि कर्ता) का समझा जाता था ।

दूसरा - सावन, बहादून, अश्विज और कातिक मासों का जब खाद्य पदार्थ पक्के होते हैं और कुछ पक्के मिलते हैं यह समय भगवान विष्णु (पालन पोषण कर्ता) का माना जाता था ।

तीसरा - मघर, पोष, माघ, फाल्गुण महीनों का - जब पदार्थों का अंकुरित होना बन्द होता है । यह समय भगवान रुद्र (संहार कर्ता) का गिना जाता था ॥

श्री महा लक्ष्मी जी का व्रत जैसा पुराण में वर्णित है उन के प्रति भगवान विष्णु के समय यानी वत्सर के दूसरे भाग में, बहादून के शुक्ल पक्ष में किसी शुभ दिन पर यहां करते आये हैं इस वक्त पूजा में लगने वाली सब सामयिक सामग्री- जैसे कमल, ताजा कपास, फलमूल आदि मिलते हैं । श्री देवी की प्रसन्नता के लिये डोर (सूत्र) जिस की पूजा इस व्रत में की जाती है ताजा (नये साल के) कपास से किसी कुमारी से कतघा कर बनाया जाने की रीति थी — अब भी किसी र जगह ऐसी रीति है किन्तु अब नारवन को ही प्रचुर प्रचार में लाया जाता है । सूत्र को कश्मीरी भाषा में पन्न कहते हैं अतः इस व्रत को यहां पन्न देने का व्रत भी कहते हैं ॥

दिव्य जीवन संघ

रेणावारी शाखा ।



ॐ श्री गणेशाय नमः

पद्मासनस्थाम् करपङ्कजाभ्यां रक्तोत्पले सन्दधतीं त्रिनेत्राम् ।  
सम्बिभ्रतीमाभरणानि रक्तां पद्मावतीं पद्ममुखीं नमामि ॥

अर्थ : कमलासन पर बैठी हुई, करकमलों से लाल, और मीले कमल को धारण करने वाली, तीन नेत्रों वाली भूषणों को धारण करती हुई लाल वर्ण श्री महा लक्ष्मी, कमल मुखी को नमस्कार करता (या करती) हूँ ॥

ॐ राजा युधिष्ठिर बोले:- हे परम पुरुष श्री कृष्ण जी । मनोवाञ्छित फल का देने वाला कोई व्रत विचार करके मुझे कहिये । श्री कृष्ण जी बोले - हे युधिष्ठिर ! पहले कृतयुग में जब इंद्र वृत्रासुर से हार गया था - तब उसने नारद जी से यही प्रश्न पूछा था । तब नारदजी कहने लगे और जो वह कह गये वही मैं तुम्हें कहता हूँ ।

नारदजी बोले :- हे इंद्र ! पूर्व काल में एक रमणीय नगर था उस का राजा मंगल नाम वाला, मानो साक्षात् मंगलों का गृह ही था । उस की दो रानियां थीं — चिल्ल देवी और चोल देवी । चिल्ल देवी दुर्भंगा थी - राजा उस से प्यार नहीं करता था । चोलदेवी महा यशस्विनी थी, तथा पट्टरानी थी । उस से राजा बहुत प्यार करता था । एक दिन मंगल राजा चोल देवी के साथ महल के शिखर पर बैठा था वहां से उस की नज़र में एक जगह आ गयी जो बड़ी सुन्दर थी । उस को देख के प्रीति के कारण हास्य युक्त मुख से वह राजा चोल देवी से कहने लगा । हे चंचलाक्षि (चञ्चल नेत्रों वाली) मैं तुम्हारे लिए वहां पर एक सुन्दर बाग बनवा दूंगा जो नन्दनवन को भी निन्दित करे । चोल देवी के अनुमोदन करने पर उस जगह पर बाग बनवाया गया वह बाग नाना लताओं और फलफूल वृक्षों



मे संपन्न हो गया । एक समय उस बाग में दुर्दैव से एक सूकर (कोलासुर) आ गया जो भयानक आकृति का था । उस काल के समान सूकर ने सारे बाग को नष्टभ्रष्ट कर दिया और कई रक्षा करने वालों को मार डाला । जो बच गये थे वह राजा के पास गये और उस को सब वृत्तांत सुनाया । राजा की आंखें लाल हो गईं और उसी समय भारी सेना लेकर बाग की ओर निकला । बाग को देख कर उसने अच्छी तरह से उस को घेरवा लिया और अपनी सेना से बोला कि जिस किसी रास्ते से यह सूकर अगर निकल गया तो जो सिपाही वहां पहले पर होगा उस के प्रमाद की सज़ा उस का सिर तलवार से वैसे काटा जाएगा, जैसे शत्रु का शिर काटते हैं । अकस्मात् जिस रास्ते में राजा खड़ा था उसी रास्ते से यह सूकर निकल भागा । राजा लजित हुआ और उसी रास्ते से सूकर के पीछे घोड़े को कोड़े मारता हुआ दौड़ा । एक वन में पहुँचा । वह महा घोर जंगल था । नाना लताओं से युक्त था । भयानक जंगली जानवरों से युक्त था । राजा सूकर की खोज में घूमता था कि इतने में सूकर उसके सामने आ गया । राजा ने भट बाण से उसको गिरा दिया । सूकर ने सूकर के शरीर को छोड़कर मदन के समान दूसरा सुन्दर शरीर धारण किया । तब दिव्य विमान में बैठा हुआ वह मंगल राजा से कहने लगा - हे महीपाल । तुम्हारा कल्याण हो, तुम ने मुझे सूकर योनि से मुक्त किया । मैं पूर्व जन्म में गन्धर्व था । गाने बजाने में बड़ा चतुर था । एक समय ब्रह्मसभा में गाते गाते जरा स्थान से भ्रष्ट हो गया इसी कारण ब्रह्माजी ने मुझ चित्ररथ गन्धर्व को शाप दिया कि तू पृथ्वी पर सूकर हो जा और जब तुमको मंगल राजा मारेगा तब तुम्हें सूकर योनि से मुक्ति होगी । वह सब आज आपके प्रसाद से हो गया । मैं बड़ा सन्तुष्ट हुआ हूँ आपको एक दुर्लभ वर देता हूँ कि एक महा



लक्ष्मी व्रत है जो धर्म, अर्थ, काम मोक्ष देनेवाला है तुम को प्राप्त हो। ऐसा कहकर वह गन्धर्व अन्तर्हित हो गया। इस के अनन्तर राजा ने सामने एक ब्राह्मण बटु को देखा। उस से पूछा कि तुम कौन हो और कहां से आये हो। बटु ने आशीर्वाद देकर कहा कि मैं आप के देश में पैदा हुआ हूं और आपके साथ ही यहां आया हूं यदि कुछ मेरे लिये काम हो तो मुझ से कहिये। राजा को वहुत प्यास लगी थी और बड़ा थका हुआ था। उस ने बटु से कहा कि कहीं जलाशय हो तो देख के मेरे लिये थोड़ा सा जल लें आओ। बटु राजा को "अच्छा" कह कर उस को बट वृक्ष के नीचे विश्रांति लेने के लिये कह कर उसी के घोड़े पर चढ़ कर जिस दिशा में पंक्ती शब्द कर रहे थे उसी दिशा की ओर चला और एक सुन्दर तालाब पर पहुँचा। वह तालाब बड़ा सुन्दर था मानो नारायण स्वरूप ही था। वह जल लाने के वास्ते किनारे पर गया वहां उसका घोड़ा कीचड़ में धँस गया। तब वह बटु घोड़े पर से उतर कर चारों ओर देख के उस तालाब के दूसरे किनारे पर गया। वहां पर उस ने एक स्त्रियों का समूह देखा जो दिव्य कथा कहती थीं। वह बटु उन के पास जा कर, अपना वृत्तान्त इन से कह कर, पूछने लगा कि आप यह क्या कर रही हो। तो उन स्त्रियों ने कहा कि त्रैलोक्य में जो माया, प्रकृति, या शक्ति है उसी महालक्ष्मी का यह व्रत कर रही हैं विधान और फल इसका पूछने पर उन्होंने ने कहा कि इस व्रत का आरंभ भाद्रपद शुक्ल अष्टमी के दिन किया जाता है सवेरे स्नान आदि शौच कर्म करके व्रतो पूजास्थान पर आ कर सोलह तंतुओं से तथा सोलह ग्रंथियों से युक्त एक दोरा (नारिवन जैसा) बनावे उस की पूजा करे और "लक्ष्म्यै नमः" इस मन्त्र से सब ग्रंथियों को अभिमंत्रित करे और दहिने हाथ में बांधे।



व्रतों और सोलह कांडों से पहले दोरे की पूजा करे । व्रत की समाप्ति कृष्ण पक्ष की अष्टमी (आश्वयुज महालक्ष्मी) के दिन करे । उस दिन पूजास्थान पर आकर आठ पत्र वाली श्वेत पत्र युक्त कमल लिखे और उस की कर्णिका पर महालक्ष्मी की मूर्ति भी लिखे और एकाग्रचित हो कर उनका ध्यान और पूजन प्रार्थना आदि करे ( यहां पर जो रीति प्रचलित है उसी के अनुसार पूजन होगा । घड़े में पानी सरोवर का चिन्ह है और उस में कमल रख कर उस पर महा लक्ष्मी की मूर्ति या चित्र रख कर पूजा की जाती है ) स्त्रियों ने विधान फल आदि विस्तार पूर्वक बटु से कहा और उसको यह व्रत करने को कहा । वह बटु फिर घोड़े को पानी पिला कर और आप भी पीकर राजा के बास्ते भी लाकर तुरन्त राजा के पास आया और उसको सारा वृत्तान्त सुनाया । राजा ने वहां ही यह व्रत संक्षेप में किया और उसके प्रभाव से ठीक रास्ते पर लग कर वहां से अपने नगर में पहुँचा । पौरजनों ने तौर्य आदि बाजों से युक्त बड़ा उत्सव किया । राजा अपने मन्दिर के पास गया और बैठ के सारा वृत्तान्त (वन की वार्ता) सुना रहा था । इतने में चोलदेवी आयी और उसने राजा के बाहु में बंधे हुए दोरे को देखा और शंका करने लगी कि यह राजा शिकार के बहाने से किसी दूसरी स्त्री के पास गया होगा और उसी स्त्री ने अपने सौभाग्य के अर्थ राजा के बाहु में यह डोरा (दोरा) बांधा होगा । राजा मन्त्रियों से वन की वार्ता सुनाने में तन्मय था चोलदेवी ने चुपके से डोरा तोड़ा और दूर जमीन पर फेंक दिया । उस समय चिलदेवी की एक दासी भी वहां पर राजा को देखने के लिये आई थी उस ने डोरे को उठा लिया और बटु से सब वृत्तान्त पूछा और वह वृत्तान्त अपनी स्वामिनी के पास जाकर कहा । एक संवत्सर बीत गया तब लक्ष्मी की पूजा के दिन चिल



देवी के मन्दिर में यह व्रत आरम्भ हुआ। जब राजा ने बाजे  
 आदि के शब्द सुने तो उसने बटु से जो अब मन्त्री के पद पर  
 नियुक्त था पूछा कि यह क्या वहां हो रहा है तो बटु से वार्ता  
 सुन कर उस से पूछा कि अरे ! वह मेरा डोरा कहां है । उस  
 से डोरे के तोड़ने का हाल सुन कर राजा चोल देवी के ऊपर  
 बड़ा क्रुद्ध हुआ और लक्ष्मी जी के पूजन के लिये चिल्लदेवी के  
 गृह में गया । इतने में लक्ष्मी जी (भीम गरजमाज - देवी गरुड  
 जी की माता) वृद्ध स्त्रीका रूप धारण कर परीक्षा के लिये चोल  
 देवी के गृह में आई - वहां चोल देवी उससे कहने लगी, हे दुष्टे !  
 तू यहां से चली जा मेरे गृह में आने से क्या है ? ऐसे अवमानित हो  
 कर लक्ष्मी जी ने उसे शाप दिया कि तू ने मेरा अनादर किया है  
 इस लिये तू शूकरमुखी हो जा तदंतर महा लक्ष्मी जी वृद्ध स्त्री  
 रूप में चिल्ल देवी के गृह में आई । जहां पूजा हो रही थी  
 बहुत प्रकार से सम्मान और पूजन स्वीकार करके उसने वृद्ध स्त्री  
 रूप को छोड़ दिया और प्रसन्न हुई तब चिल्लदेवी ने उन श्रीजी  
 की पंचोपचार से पूजा की । श्री देवी पूजन से प्रसन्न हुई और  
 रानी को वर मांगने को कहा । रानी बोली:- हे सुरेश्वरी तुम्हारा  
 यह व्रत जो करेंगे उनका गृह आप से कदापि न त्यागा जावे  
 और आज से यह भूपकी कथा संसार में विख्यात हो और  
 हे देवी जी ! मेरी भक्ति सदा आप में बनी रहे और सद्भाव  
 मे जो इस कथा को सुनें या पढ़ेंगे उनको वांछित फल आपको  
 सदैव देना चाहिये । "तथास्तु" कह कर महालक्ष्मी जी वहां ही  
 अन्तर्हित हो गईं । उस समय दुराचारिणी चोल देवी चिल्लदेवी  
 के गृह की ओर ईर्ष्यासे आई परन्तु द्वारपालों से वारित होने से  
 वह भागी और जंगल में अगिरा ऋषि के आश्रम पर पहुंची ।  
 चोल देवी की अद्भुत आकृति देख के ज्ञान दृष्टि से विचार  
 करके उस मुनिने रानी से महा लक्ष्मी जी का व्रत कराया ।

व्रत करने से रानी महा यशस्विनी तथा लावण्य का स्थान हो गई । फिर किसी समय राजा शिकार के लिये वन में आया तब उस ने उस मुनि के आश्रम में उस सुन्दर स्त्री को देखा । मुनि से पूछा कि यह धन्या स्त्री कौन है । मुनि ने उसका सब हाल राजा को सुनाया और उस को राजा के हवाले किया । राजा चोलदेवी के साथ अपने राज्य में आ गया । चिल्ल देवी भी “चोलदेवी समागमर्त” याने चोलदेवी जहां कहीं गयी है । वहां से लौट आवे, ऐसा वर श्री देवी से मांगती रही थी । अब दोनों का समागम हुआ तब जैसे गंगा यमुना समुद्र से सदा मिली रहती हैं वैसे ही मंगल राजा से वह स्त्रियां मिल गईं । वह मंगल राजा दोनों स्त्रियों के साथ प्यारी पृथिवी को भोगता हुआ अन्त में आकाश में जा के विष्णु दैवत (श्रवण) नक्षत्र हुआ । नारद जी बोले हे इन्द्र ! यह व्रत सब व्रतों में उत्तम है सब तीर्थों में जैसे प्रयाग, देवों में जैसे भगवान्, नदियों में जैसे गंगा । इस व्रत के करने से अवश्य वांछित फल की प्राप्ति होती है तुम इस व्रत को करो । श्री कृष्ण जी युधिष्ठिर से बोले हे - युधिष्ठिर तुम भी इस व्रत को करो । इन्द्र ने इस व्रत को किया और व्रतासुर के भय से मुक्त हुआ तुम भी इस व्रत के करने से वांछित फल प्राप्त करोगे ॥

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

श्री भविष्योत्तर पुराण में दी हुई कथा का संक्षिप्त अनुवाद समाप्त हुआ ।

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुर भयंकरि । सर्व पाप हरं देवि महा लक्ष्मि नमोस्तु ते ॥

देवी करे — जैसे इन दोनों रानियों के दिन समय पर फिर वैसे ही सब दुःस्त्रियों के दिन फिरें और उन की बिगड़ी देवी बना दें ॥